Vol. I, Issue IV January' 2020

कामरूप दर्पण

मारवाड़ी सम्मेलन, कामरूप शाखा का मुखपत्र

(Society Regd No. : RS/KAM (M) 263/Q/264 of 2017-18)

e-mail : sammelankamrupsakha@gmail.com URL : www.sammelankamrupsakha.com

मारवाड़ी सम्मेलन
कामरूप शाखा

: संपादक :
श्री विनोद कुमार लोहिया

: संपादकीय सहयोगी :
श्री पवन कुमार जाजोदिया

: पृष्ठ सज्जा :
शामेश्वर शर्मा

: मुद्रक :
वसुंधरा एसोसिएट्स
बामुनिमैदाम, गुवाहाटी

भरसक प्रयास किया गया है कि 'कामरूप दर्पण' के इस अंक में कोई त्रुटि ना रहे, परंतु भूल मानव का स्वभाव है, अत: कोई त्रुटि रह गई हो तो खेद है। कोई सुझाव हो तो sammelankamrupsakha@gmail.com के माध्यम से सूचित करें।

अध्यक्षीय सम्बोधन

मैं अति प्रसन्नता एवं गर्व अनुभव कर रहा हूं कि मारवाड़ी सम्मेलन, कामरूप शाखा की इस त्रैमासिक पत्रिका के चतुर्थ अंक का विमोचन हो रहा है। प्रत्येक पत्रिका में संपादक के माध्यम से, लेखकों की लेखनी में नवीनता तथा समाजहित में उत्कृष्ट मंथन प्रकाशित हो रहा है। पत्रिका में वर्तमान परिप्रेक्ष्य के ज्वलंत विषयों के अलावा शिक्षा, समाज इत्यादि विषयों को समाहित किया जा रहा है।

अंग्रेजी नववर्ष, मकर संक्रांति, समाज को एक सूत्र में पिरो कर रखने वाले जनमानस का प्रिय भोगाली बिहु उत्सव एवं गणतंत्र दिवस बीत चुके हैं। होली की आप सभी समाज बंधुओं को अग्रिम हार्दिक शुभकामनाएं। यह सारे उत्सव मानव जीवन के वैयक्तिक परिचय के अलावा सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक एकता को बढ़ावा देते हुए हम सभी के जीवन की उन्नति में वृद्धि करे। इन्हीं भावनाओं के साथ मैं निर्गुण निराकार परमात्मा से 'सर्वे सन्तु निरामया:' की भावना प्रकट करता हूं।

मारवाड़ी सम्मेलन, कामरूप शाखा के लिए तथा शाखा के सदस्यों के लिए 2019 वर्ष बहुत ही उत्कृष्ट वर्ष रहा है। 'एक खोज...प्रतिभा की...' कार्यक्रम, सदस्यों एवं उनके परिवार के लिए 'दीपावली मिलन समारोह', 'नि:शुल्क वोटर फेसिलिटेशन सेंटर' के द्वारा विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक उत्तरदायित्वों का परिपालन किया गया। शाखा ने समाजहित में समाज के लोगों को जोड़ने का प्रयास किया।

नागरिकता संशोधन कानून 2019 के विरोध के चलते पूरे राज्य में जारी आंदोलन के कारण फिलहाल डिब्रुगढ़ में होने वाले प्रांतीय अधिवेशन को स्थगित किया गया है। वर्तमान में समाज में तथा पूरे राज्य में कई ज्वलंत विषय व्याप्त हैं। कुछ विषयों पर जनसाधारण का ध्यान केंद्रित है, जैसे कि नागरिकता संशोधन कानून, एनआरसी, संविधान कि धारा '6'। देर-सवेर नया नेतृत्व अपने कार्यकाल में इन सब विषयों को सभी समाज बंधुओं के साथ सामंजस्य बैठाकर सशक्त एवं संगठित समाज की परिकल्पना को साकार कर यह लक्ष्य प्राप्त करने में सक्षम रहेगा, ऐसी हम कामना करते हैं।

कामरूप शाखा के सभी सम्मानित सदस्य अपने आप में तथा समाजहित में सभी वर्गों के सामाजिक सांस्कृतिक विधा को साकार रूप देने हेतु प्रयत्नशील एवं कार्यरत हैं। इस पत्रिका के माध्यम से पुन: आप सभी से नम्र निवेदन है कि शाखा के प्रत्येक परियोजना में सक्रिय सहभागिता करें तथा अन्य समाजबंधुओं को कामरूप शाखा से जुड़ने के लिए भी प्रेरित करें, ताकि कामरूप शाखा सर्वोत्तम शाखा बने।

जय आई असम, जय समाज, जय हिन्द

संपादकीय

होली की हार्दिक शुभकामनाएं। कामरूप दर्पण का चतुर्थ अंक आपके हाथों तक पहुँचाने में आनंद की अनुभूति कर रहा हूँ।

हमारी शाखा ने मतदाता सूचि में नाम स्थापित्य करने के लिए गत 9 एवं 10 नवंबर 2019 को शिविर का आयोजन कर सामायिक विषयों पर अपनी जिम्मेदारी का परिचय दिया। 18 दिसंबर 2019 को पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मलेन के नेतृत्व में विभिन्न मारवाड़ी संगठनों सहित कामरूप शाखा ने CAA (सिटीजन अमेंडमेंट एक्ट, 2019) के विरोध में स्थानीय समाज के आह्वान पर स्थानीय महावीर उद्यान, फैंसी बाजार के निकट में गण सत्याग्रह में भाग लेकर स्थानीय समाज के प्रति अपनी प्रतिबध्दता दोहरायी।

'कामरूप दर्पण' के माध्यम से हम मारवाड़ी समाज के लोगों की उपलब्धियों अपने पाठकों तक पहुँचाने की कोशिश करते हैं ताकि उनका हौसला बढ़े और समाज को इनके और इनकी उपलब्धियों के बारे में पता चले। हमारे समाज के लोग हर क्षेत्र में नए मापदंड तय कर रहें हैं। अंतर्राष्ट्रीय पटल पर मयंक अग्रवाल ने अति कम समय में ख्याति अर्जित की है। जहाँ जोरहाट के श्रीमती संगीता एवं श्री दिलीप गट्टानी की पुत्री सुश्री प्रियांशी गट्टानी ने डॉ. करनी सिंह शूटिंग रेंज में 12 से 15 नवंबर 2019 को ऑल इंडिया अंतर यूनिवर्सिटी शूटिंग चैम्पियनशिप के राइफल इवेंट (दस मीटर) में स्वर्ण पदक पर निशाना साधा तो गुवाहाटी के श्रीमती सुमन और श्री अरविंद सीकरिया के पुत्र श्री अर्चित सिकरिया मलेशिया के लैंगकॉवी द्वीप में 26 अक्टूबर 2019 को आयोजित हाफ आयरनमैन मलेशिया प्रतियोगिता में 8 घंटे 13 मिनट 36 सेकंड का समय निकलते हुए हाफ आयरनमैन का खिताब अर्जित किया, जिसमें उन्होंने 1.9 किमी समुद्र में तैराकी, 90 किमी साइकिलिंग और 21.1 किमी की दौड़ पूरी की। अमेरिका के येल यूनिवर्सिटी में तिनसुकिया के युवा विद्वान श्रीमती शालिनी एवं श्री विशेष अग्रवाल के पुत्र राज अग्रवाल और श्रीमती शीहा एवं श्री अंकुर सोवासरिया की पुत्री ईशा सोवासरिया ने 8 नवंबर 2019 को संपन्न वर्ल्ड स्कॉलर्स कप में कुल 8 पदक जीत कर अपना लोहा मनवाया। वहीं हमारी शाखा के सदस्य श्री प्रदीप जाजोदिया एवं श्रीमती जूली के कनिष्ठ पुत्र वरुण जाजोदिया ने हाल में ही पुडुचेरी में स्कूल क्रिकेट फेडरेशन ऑफ इंडिया द्वारा आयोजित 10वीं स्कूल नेशनल चैंपियनशिप (ब्यॉज अंडर फोर्टीन) टीम में असम का प्रतिनिधित्व करने का गौरव प्राप्त किया है। शिक्षा के क्षेत्र में हमारी शाखा के सदस्य श्री राजेंद्र गुप्ता एवं श्रीमती सपना की पुत्री सुश्री प्रीति गुप्ता ने N.E.F. Law College से गुवाहाटी विश्वविद्यालय से और डिब्रुगढ़ शाखा के अध्यक्ष श्री राजकुमारजी अग्रवाल एवं श्रीमती राखी की पुत्री सोनल अग्रवाल ने Dr. R.K.B. Law College कॉलेज से डिब्रुगढ़ विश्वविद्यालय से 1st क्लास फर्स्ट पोजीशन प्राप्त की है और बहुत सारे सितारे होंगे, जिनके बारे में हमें पता नहीं चल पता हैं। मारवाड़ी समाज को इन पर अभिमान है और कामरूप शाखा की तरफ से हम इन सभी के उज्जवल भविष्य की कामना करते हैं। डिब्रुगढ़ में षोडश प्रांतीय अधिवेशन चल रहा है। गत 4 वर्षों में सम्मलेन ने पूर्वोत्तर में नई उचाइयां पाई हैं, लेकिन तृप्त होना मानव की प्रवृति नहीं हैं। इस बार अधिवेशन का मजमून है 'संगठित समाज-सशक्त समाज', जो शास्वत सत्य है। मारवाड़ी समाज में बहुत सारे घटक हैं, लेकिन मारवाड़ी समाज के बाहर हमारी पहचान सिर्फ और सिर्फ मारवाड़ी है। अगर हमने अलग दिखने की कोशिश की तो निसंदेह यह आत्मघाती कदम सिद्ध होगा। सम्मलेन की कीर्ति में इजाफा हो।

इस त्रैमासिक मुखपत्र पर बहुत कम लोगों की प्रतिकिया आ रही है। आपकी आलोचना, प्रशंसा, मीमांशा, सभी हमारे लिए मत्वपूर्ण हैं। हमारे निवर्तमान अध्यक्ष पवन जी के सहयोग के लिए उनका ह्रदय से आभार।

विनोद कुमार लोहिया
संपादक, कामरूप दर्पण
संपर्क सूत्र : vklohia@gmail.com

राजस्थानी का पक्ष

✍ प्रमोद तिवाड़ी

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल॥

भारतेंदु हरिशचंद्र की ये पंक्तियां अपनी भाषा की अहमियत का बखान करती हैं। मातृभाषा के बिना किसी भी समाज की उन्नति संभव नहीं है और अपनी भाषा के ज्ञान के बगैर मन की पीड़ा को दूर करना भी मुश्किल है। निज भाषा के संबंध में इस तरह की विचारोत्तेजक व संवेदनाओं को झकझोरने वाली पंक्तियां पढ़कर ध्यान बरबस मायड़ भाषा राजस्थानी की दुर्दशा की ओर खींचा चला जाता है। स्वाभाविक रूप से मन में टीस उठती है कि तकरीबन 9 करोड़ लोगों द्वारा बोली जाने वाली समृद्ध भाषा को अब तक संवैधानिक मान्यता नहीं मिल पाई है। राजस्थानी को संविधान की आठवीं अनुसूची में स्थान दिलाने के लिए वर्षों से प्रयास जारी हैं, पर अभी तक सफलता नहीं मिली। गौरतलब है कि हमारे संविधान ने 22 भाषाओं को मान्यता दे रखी है, जिनमें संथाली, बोड़ो, मणिपुरी, सिंधी, डोगरी, कोंकणी, कश्मीरी जैसी कुछ लाख लोगों द्वारा बोली-समझी जाने वाली भाषाएं भी शामिल हैं। ऐसे में 9 करोड़ से अधिक लोगों की भाषा के साथ नाइंसाफी समझ से परे है।

राजस्थानी और इसकी विशेषताएं:

राजस्थानी का निर्माण छह प्रमुख बोलियों से हुआ है। मेवाड़ी, ढूंढाड़ी, शेखावटी, हाड़ौती और बागड़ी शामिल हैं। मारवाड़ी राजस्थानी की प्रमुख बोली है। विश्व भर में इसे बोलने वालों की संख्या 4.5 से 5 करोड़ के बीच है। राजस्थानी स्वयं में एक संपूर्ण भाषा है। साहित्य के अमूमन हर विधाओं की इस भाषा में समृद्ध परंपरा रही है। इस भाषा में विपुल मात्रा में लोकगीत, संगीत, नाटक, कथा, कहानी व अन्य साहित्य उपलब्ध है।

डिंगल और पिंगल साहित्यिक राजस्थानी के दो प्रकार हैं। डिंगल पश्चिमी राजस्थानी का साहित्यिक रूप है। इसका अधिकांश साहित्य चारण कवियों द्वारा लिखित है। पिंगल पूर्वी राजस्थानी का साहित्यिक रूप है। इसका अधिकांश साहित्य भाट जाति के कवियों द्वारा लिखा गया है। डिंगल और पिंगल दोनों शैलियों के नाम हैं, भाषाओं के नहीं। पृथ्वीराज रासो पिंगल शैली की उत्कृष्ट रचना है।

राजस्थानी राजस्थान, मालवा व पाकिस्तान के बहावलपुर इलाकों में बोली जाती है। पाकिस्तान में राजस्थानी कायदो नाम से व्याकरण बोली चलता है। साहित्य अकादमी और विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा मान्यता प्राप्त राजस्थानी का अपना व्याकरण है। इसके शब्द भंडार में 3 लाख से अधिक शब्द हैं। जोधपुर और उदयपुर विश्वविद्यालयों में राजस्थानी शिक्षण की व्यवस्था है। इसे वर्तमान में देवनागरी में लिखा जाता है। अमेरिका की लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस ने राजस्थानी को विश्व की 13 समद्धतम भाषाओं में शामिल किया है। राजस्थान विधानसभा ने वर्ष 2009 में राजस्थानी को संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल करने का प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित कर केंद्र सरकार को भेजा था। राजस्थानी ने देश को विजयदान देथा जैसे साहित्यकार दिए हैं, जिनका नाम वर्ष 2011 में साहित्य के नोबेल के लिए प्रस्तावित हुआ था। भारत में रवींद्रनाथ टैगोर के बाद वे दूसरे साहित्यकार हैं, जिनके नाम का चयन नोबेल पुरस्कार के लिए हुआ। देथाजी का देहांत साल 2013 में हो गया। उनकी रचनाओं पर पहेली, परिणति जैसी कई फिल्में बनीं। प्रसिद्ध नाटक चरणदास चोर भी देथाजी की रचना पर आधारित था।

कन्हैयालाल सेठिया का गीत धरती धोरां री और सुखबीर सिंह कविया की कविता क्यूं भूल्या मायड़ बोली नै... किसी भी राजस्थानी को भावुक कर सकती है।

राजस्थानी को मान्यता मिलने में रूकावटें:

राजस्थानी को संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल नहीं किए जाने का करण है राजस्थानी बोलने वालों की अपनी मायड़ भाषा के प्रति बेरुखी। मातृभाषा को लेकर राजस्थान के किसी भी अंचल में कोई आग्रह, कोई चेतना नजर नहीं आती। प्रवासी राजस्थानी भी अपनी भाषा को लेकर संवेदनहीन ही हैं। स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान तत्कालीन राजपूताना के लोगों ने तथाकथित हिंदी पट्टी के अन्य लोगों के साथ हिंदी को राष्ट्रीयता का पूरक मान उसे अंगीकार कर लिया। राजस्थान व हिंदी पट्टी के लोग यह समझ ही नहीं पाए कि हिंदी उनकी बोलचाल की भाषा तो हो सकती है, यह मातृभाषा का स्थान नहीं ले सकती। यहां दिलचस्प बात यह भी है कि हिंदी और उर्दू आधुनिक भारतीय भाषाएं हैं। इनके पास अपना लोक साहित्य तक नहीं है।

दूसरे, हिंदी की पैरोकारी करने वाले यह दलील देते हैं कि राजस्थानी, भोजपुरी, अवधी, बृज आदि हिंदी की बोलियां हैं। वे कहते हैं कि राजस्थानी और भोजपुरी की संवैधानिक मान्यता मिलने से हिंदी का पक्ष भारत में और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कमजोर होगा। राजस्थानी और भोजपुरी बोलने वाले जब हिंदी को छोड़कर अपनी भाषाओं को मातृभाषा बताने लगेंगे तो हिंदी का नुकसान होगा। बातचीत को राजस्थानी पर केंद्रित रखें तो यहां यह बताना समीचीन है कि राजस्थानी हिंदी से काफी पुरानी एक स्वतंत्र भाषा है। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि भाषाएं कभी एक-दूसरे की प्रतिद्वंद्वी नहीं, बल्कि सहोदरा होती हैं। राजस्थानी और हिंदी दोनों मूलत: आर्य भाषाएं हैं। राजस्थानी का विकास होगा तो हिंदी भी निश्चित रूप से और पुष्ट होगी।

तीसरे, राजस्थानी बोलने वाले लोगों ने अपनी मायड़ भाषा की स्थिति अंधेरी कोठरी में बुढ़ी मां जैसी कर दी है। राजस्थान के लोगों में भाषाई चेतना का अभाव साफतौर पर दृष्टिगोचर होता है। वहां के लोगों में भाषा को लेकर निजता का आभाष नहीं के बराबर है। अलबत्ता आज की तारीख में जयपुर से ज्यादा राजस्थानी (मारवाड़ी) कोलकाता में बोली जाती है। सनद रहे कि विश्व विरादरी में मान-सम्मान हासिल करने के लिए किसी भी भाषा को संघर्ष के रास्ते से गुजरना पड़ता है। बोड़ो जैसी भाषा, जिसकी लिपि को लेकर आज भी विवाद है, को संवैधानिक मान्यता दिलाने के लिए बोड़ो जाति ने संघर्ष किया। असमिया लोगों के भाषाई आग्रहों से समूचा विश्व परिरिचत है। संथाली, डोगरी, मणिपुरी, कश्मीरी, कोंकणी जैसी भाषाओं को भी बैठ-बिठाए मान्यता नहीं मिली। पर अभागी राजस्थानी के लिए रोने-कुकने वाला तक कोई नहीं है। चौथे, जहां तक प्रवासी राजस्थानियों (मारवाड़ियों) का सवाल है तो उनके घरों से भी मारवाड़ी भाषा शनै: शनै: लुप्त होती जा रही है। मारवाड़ी कहलाने में हीनता के बोध का असर मारवाड़ी भाषा पर भीसाफ दिखाई पड़ रहा है। लोग घरों में बच्चों से मारवाड़ी में बातचीत तक नहीं करना चाहते। विडंबना यह है कि बच्चों को मारवाड़ी न आना अब शान की बात समझी जाने लगी है। अगर हालात यही रहे तो एक-दो पीढ़ी के बाद मारवाड़ियों, खासकर हम जैसे प्रवासी मारवाड़ियों के घरों से हमारी भाषा गायब हो जाएगी। अपनी जड़ों से पहले से ही सैकड़ों मील की दूरी पर रहने वाले लोगों से भाषा का साथ भी छूट जाना एक बेहद त्रासद स्थिति होगी। भाषाई चेतना की कमी के शिकार मारवाडी समाज को समझना होगा कि किसी भी संस्कति का सारा तानाबाना उसकी भाषा के ही इर्द-गिर्द बना होता है। भाषा के विलुप्त होने से संस्कृतियों का अवसान अवश्यंभावी हो जाता है। शायद कोई भी राजस्थानी (मारवाड़ी) नहीं चाहेगा कि गणगौर, सिंधारा, बासेड़ा व उसके अन्य तीज-त्योहार, परंपरा व मान्यताएं. रीति-रिवाज इतिहास के पन्नों में गुम हो जाएं। इस स्थिति को टालना है तो अपनी भाषा को सम्मान देना होगा।

उत्साह के साथ मनाया गणतंत्र दिवस

हर वर्ष की तरह इस बार भी मारवाड़ी सम्मेलन, कामरूप शाखा ने गणतंत्र दिवस बड़े उत्साह के साथ मनाया। इस वर्ष शाखा ने मारवाड़ी सम्मेलन की गुवाहाटी महिला शाखा के साथ संयुक्त रूप से इस राष्ट्रीय पर्व को मनाया। गणतंत्र दिवस का कार्यक्रम आठगांव चाबीपूल प्राथमिक विद्यालय में संयुक्त रूप से मनाया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित प्रांतीय अध्यक्ष श्री मधुसूदन सीकरिया ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया। कार्यक्रम में प्रांतीय महामंत्री श्री राजकुमार तिवारी, प्रांतीय कोषाध्यक्ष श्री संजय मोर विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे। कामरूप शाखा के कार्यकारी अध्यक्ष श्री विनोद कुमार लोहिया, संस्थापक अध्यक्ष श्री संपत मिश्र, पूर्व अध्यक्ष व कार्यक्रम संयोजक श्री पवन कुमार जाजोदिया, सचिव श्री दिनेश गुप्ता, महिला शाखा की अध्यक्ष श्रीमती कंचन केजरीवाल, श्रीमती रेणु चौधरी, श्रीमती सुषमा शर्मा के अलावा कई सदस्य उपस्थित थे। इस अवसर पर महिला शाखा द्वारा एक अनोखी रिक्शा रैली निकाली गई। इस रिक्शा रैली का उद्देश्य पर्यावरण संरक्षण के प्रति लोगों को जागरूक करना था। इस कार्यक्रम के इतर कामरूप शाखा व महिला शाखा के सदस्यों ने विष्णुपुर स्थित भारत विकास परिषद के कार्यालय में नारी सशक्तिकरण पर आयोजित कार्यशाला में भाग भी लिया।

बच्चों संग मनाया माघ बिहू व मकर संक्रांति का पर्व

मारवाड़ी सम्मेलन, कामरूप शाखा ने राज्य के पारंपरिक उत्सव भोगाली बिहू व मकर संक्रांति का पर्व मनाया। शाखा ने अग्रवाल सखी के साथ गत 14 जनवरी को काहिलीपारा के भगदतपुर स्थित *डेस्टिनेशन होम* के मंदबुद्धि बच्चों के साथ माघ बिहू मनाया। कार्यक्रम की शुरुआत में अग्रवाल सखी द्वारा कामरूप शाखा के अध्यक्ष निरंजन सीकारिया और संस्थापक अध्यक्ष संपत मिश्र का फुलाम गमछा से सम्मान किया गया। इसके बाद डेस्टिनेशन की संचालक रूपा हजारिका को एक उपहार दिया गया। मारवाड़ी सम्मेलन कामरूप शाखा द्वारा प्रांतीय महामंत्री राजकुमार तिवाड़ी, अग्रवाल सखी की अध्यक्षा सुनीता भिलवड़िया का भी फुलाम गमछा से सम्मान किया गया। इसके बाद मेजी जलाई गई। इस कार्यक्रम में

अग्रवाल सखी की सभी सदस्याएं असमिया पारंपरिक वेशभूषा मेखला चादर में बिहू नृत्य किया। वहीं रस्सी खींच मुजिकल चेयर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। शाखा द्वारा डेस्टिनेशन होम को जरूरत के सामान प्रदान किए। इस कार्यक्रम में मारवाड़ी सम्मेलन के कार्यकारी अध्यक्ष विनोद लोहिया, मंत्री दिनेश गुप्ता, अनुज चौधरी, दीपक जैन, अजीत शर्मा, धनराज कंकानी, विनोद शर्मा, संतोष जैन, राजेश जाजोदिया, संदीप बजाज, रतन खाकोलिय, संजय खेतान, उमा शंकर गट्टाणी, दिलीप अग्रवाल के अलावा अग्रवाल सखी की उपाध्यक्ष सोनिया गर्ग, संयुक्त मंत्री नीलू अग्रवाल, कोषाध्यक्ष अनीता कुंपावत, सह कोषाध्यक्ष डोली गोयनका व अन्य सदस्याओं ने भाग लिया।

तृतीय कार्यकारिणी की तृतीय सभा

मारवाड़ी सम्मेलन, कामरूप शाखा की तृतीय कार्यकारिणी की तृतीय सभा गत 11 अक्टूबर 2019 को गुवाहाटी के स्थानीय होटल अतिथि में आयोजित की गई। शाखा के कार्यकारी अध्यक्ष श्री विनोद कुमार लोहिया द्वारा सभा के शुभारंभ की घोषणा की। इसके बाद निवर्तनाम अध्यक्ष श्री पवन कुमार जाजोदिया ने स्वंत्रता दिवस तथा नि:शुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर की रिपोर्ट एवं आय-व्यय का ब्यौरा प्रस्तुत किया। 'एक खोज... प्रतिभा की' कार्यक्रम के संयोजक श्री पवन पसारी की अनुपस्थिति में शाखा सचिव श्री दिनेश गुप्ता ने कार्यक्रम की रिपोर्ट एवं आय-व्यय की रिपोर्ट का पठन किया। सभा में श्री संतोष जैन को कार्यकारिणी में समिलित किया गया तथा संस्थापक अध्यक्ष श्री संपत मिश्र ने उन्हें शपथ दिलाई। सभा में 'कामरूप दर्पण' के तृतीय संस्करण का विमोचन संपत मिश्र ने किया। सभा में 'कामरूप दर्पण' के संपादक श्री विनोद कुमार लोहिया और श्री पवन कुमार जाजोदिया का पत्रिका के उत्कृष्ट संपादन के लिए अभिनंदन किया गया। सभा में अन्य कार्यक्रमों पर भी चर्चा की गई। सभा में श्री पवन कुमार जाजोदिया को सम्मेलन स्थापना दिवस के कार्यक्रम के लिए संयोजक नियुक्त किया। सभा में श्री विनोद कुमार लोहिया, श्री पवन कुमार जाजोदिया, श्री विजय अग्रवाल, श्री विजय भिमसरिया, श्री संपत मिश्र, दीपक जैन, श्री अनुज चौधरी, श्री उमेश बाजोरिया, श्री संजय खेतान, श्री उमा शंकर गट्टाणी, श्री प्रभात शर्मा, श्री विनोद शर्मा, श्री धनराज कंकानी, श्री राजेश पोद्दार, श्री राजेश जाजोदिया, श्री रतन अग्रवाल, श्री रतन खाखोलिया, श्री संतोष जैन ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। अंत में शाखा सचिव श्री दिनेश गुप्ता ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

वसन्त खेतान ने बढ़ाया मान

राष्ट्रीय एमएसएमई पुरस्कार से हुए सम्मानित

केंद्र सरकार के सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम मंत्रालय (एमएसएमई) ने निकॉन पावर एंड इनफ्रा लिमिटेड के निदेशक वसंत केतान का नाम पूर्वोत्तर के लिए प्रतिष्ठित राष्ट्रीय एमएसएमई पुरस्कार हेतु चुना गया है। दिल्ली में होने वाले राष्ट्रीय एमएसएमई अवार्ड वितरण कार्यक्रम में श्री खेतान को यह पुरस्कार प्रदान किया जाएगा। भारतीय एमएसएमई क्षेत्र के विकास व प्रगति में श्री खेतान के उल्लेखनीय योगदान के लिए इस प्रतिष्ठित अवार्ड से उन्हें सम्मानित किया जाएगा।

केंद्रीय एमएसएमई यह विश्वास करता है कि एमएसएमई क्षेत्र में श्री खेतान की सफलता से अन्य एमएसएमई को निश्चित रूप से प्रेरणा मिलेगी। मासूम हो कि श्री खेतान का पूर्वोत्तर में एमएसएमई क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान है, जिसके कारण इससे पहले उन्हें 2017 में श्रेष्ठ उद्यमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। फिलहाल श्री वसंत खेतान जोरहाट स्थित असम काजीरंगा विश्वविद्यालय के वाइस चांसलर भी हैं।

गरीब विद्यार्थियों की नि:स्वार्थ सेवा में जुटे उद्योगपति अजीत खेतान

कार्बी आंग्लांग जिले के नाम्बर नदी चाय बादान शांतिपुर निवासी विशिष्ट उद्योगपति अजीत खेतान ने वर्ष 2007 से वृहत्तर बरपथार अंचल के 40 से अधिक गरीब छात्र-छात्राओं की पढ़ाई की व्यवस्था की है। वे नि:स्वार्थ भाव से यह काम कर रहे हैं। इन छात्र-छात्राओं की किताब से लेकर यूनिफॉर्म आदि के लिए जो भी खर्च होते हैं, वे सब श्री केतान द्वारा वहन किया जता है। 13 सालों के इस अंतराल में कई छात्र-छात्राएं अपनी पढ़ाई कर कई टीचर तो कुछ फैक्ट्री आदि में जॉब मे लगे हुए हैं। श्री केतान का यह जज्बा सुधाकंठ डॉ. भूपेन हजारिका के इस गीत *मानुहे मानुहर बाबे* पर सटीक बैठता है। गौरतलब है कि उन्होंने सिलोनीजान शंकरदेव शिशु निकेतन में छात्र-छात्राओं को लाने ले जाने के लिए मारुति वैन दान में दी है। इससे क्षेत्र के गरीब छात्र-छात्राओं को काफी सुविधा हुई। इसके लिए शंकरदेव शिशु निकेतन स्कूल प्रबंधन समिति और स्थानीय लोगों ने श्री खेतान का आभार जताया है। यह जानकारी शंकरदेव शिशु निकेतन के सचिव निपोन महंत ने दी है।

हाफ आयरनमैन मलेशिया बने अर्चित सीकरिया

गुवाहाटी के फैंसी बाजार के निवासी अर्चित सीकरिया हाफ आयरनमैन मलेशिया बन गए हैं। अपने उत्कृष्ट प्रदर्शन से भारत का सिर दुनिया के खेल मंच पर ऊंचा करने वाले खिलाड़ी अर्चित सीकरिया (बिदावतका) ने 8 घंटे और 13 मिनट 36 सेकेंड के रिकॉर्ड समय में ही आयरनमैन मलेशिया चैंपियनशिप को पूरा करने वाले भारतीय बन गए। मालूम हो कि बीते 26 अक्तूबर को मलेशिया के लैंगकॉवी द्वीप पर आयरमैन मलेशिया का आयोजन किया गया था। इसे दुनिया की सबसे कठिन एक दिवसीय आयोजन माना जाता है, जिसमें एक के बाद तीन केल- साइकिलिंग, दौड़ व तैराकी शामिल होती है। अर्चित भारत के प्रमुख खिलाड़ियों में शामिल हो गए हैं। अर्चित ने इस एक दिवसीय प्रतिस्पर्द्धा में 1.9 किमी. समुद्र में

तैराकी, 90 किमी. खतरनाक पड़ाडों कगी सड़क पर साइकिलिंग और 21.1 किमी. दौड़ में शामिल हुए, जिसे लगातार 8.30 घंटे में पूरा करना था, लेकिन अर्चित ने इसे तय अवधि से पहले 8 घंटे 13 मिनट 36 सेकेंड में पूरा कर लिया। उल्लेखनीय है कि अर्चित ने ओवरऑल 708वीं रैंक हासिल करने में सक्षम रहे। गौरतलब है कि अर्चित ने इसमें भाग लेने से पहले यहां रजनीश गोस्वामी से कठिन प्रशिक्षण लिया था और पहली बार में ही उसने हाफ आयरनमैन का लक्ष्य प्राप्त कर लिया। अर्चित का कहना है कि अब उसका अगला लक्ष्य फुल आयरनमैन का खिताब जीतना है और इसके लिए वे पूरी तैयारी कर रहे हैं। उन्होंने अपनी सफलता का श्रेय अपने पिता अरविंद सीकरिया, मां सुमन सीकरिया, बड़े भाई और प्रशिक्षक को दिया। अर्चित इलेक्ट्रिकल जिनियरिंग, एमएस की शिक्षा पूरी करने के साथ अपने पिता के कारोबार को आगे बढ़ाने में भी काम कर रहे हैं। युवाओं को संदेश देते हुए अर्चित ने कहा कि युवाओं को अपने आप को पूरी तरह फिट रखते हुए इसमें भाग लेना चाहिए। इससे आगे का रास्ता साफ हो जाता है।

जोरहाट की प्रियांशी ने शूटिंग में लहराया परचम

ऑल इंडिया इंटर यूनिवर्सिटी शूटिंग चैंपियनशिप के राइफल इवेंट में साधा सोने पर निशाना

निशानेबाजी में अपनी बेहतरीन प्रतिभा की चमक लगातार बिखेर रही जोरहाट की प्रियांशी गट्टानी ने कल एक और उपलब्धि अपने नाम की। प्रियांशी ने ऑल इंडिया इंटर यूनिवर्सिटी शूटिंग चैंपियनशिप के राइफल इवेंट (दस मीटर) में स्वर्ण पदक पर निशाना साधा। प्रियांशी ने दिल्ली-एनसीआर स्थित डॉ. करणी सिंह शूटिंग रेंज में 12 से 15 नवंबर के बीच चार दिवसीय प्रतिस्पर्द्धा में एक के बाद एक टारगेट हिट करती रही और मुकाबले में सभी को ढेर करते हुए गोल्ड मेडल हासिल किया। दिल्ली विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व कर रही प्रियांशी ने इस सफलता से अगले साल वर्ल्ड यूनिवर्सिटी चैंपियनशिप में खेलने का टिकट भी हासिल किया। पंजाब व पुणे विश्वविद्यालय के खिलाड़ियों ने क्रमश: रजत व कांस्य पदक प्राप्त किया। नेशनल राइफल एसोसिएशन की देखरेख और मानव रचना इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी की मेजबानी में हुई इस प्रतियोगिता में देश भर के 150 से अधिक विश्वविद्यालय के लगभग 1300 से अधिक प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। राइफल, शॉटगन और पिस्टल को शामिल करते हुए तीन वर्गों में आयोजित प्रतियोगिता में दिल्ली का बोलबाला रहा। प्रियांशी के साथ ही पिस्टल में तेजतर्रार निशानेबाज मनु भाकर ने भी दिल्ली विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व करते हुए स्वर्ण पदक प्राप्त किया। प्रियांशी की सफलता पर उसके प्रशिक्षक अनिल ठाकुर ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि आने वाले समय में कई और बड़ी उपलब्धियों की यह महज शुरुआत है। उल्लेखनीय है कि यूनियन वर्ल्स स्कूल, देहरादून से ही प्रियांशी के ट्रेनर रहे श्री ठाकुर अब भी उसे निखारने में लगे हैं। प्रियांसी के बेहतरीन प्रदर्शन के चलते स्कूल ने उसे विशेष छात्रवृत्ति के तहत अभ्यास की तमाम सुविधाएं दी है।

जोरहाट के कार्मेल स्कूल की छात्रा रही प्रियांशी यूनिसन से इंटर कर अब दिल्ली के प्रतिष्ठित हंसराज कॉलेज में आगे की पढ़ाई कर रही है। इंटर कॉलेज में गोल्ड और फिर दिल्ली यूनिवर्सिटी में खुद को अव्वल साबित कर प्रियांशी कई बाधाओं को पार करते हुए करणी सिंह शूटिंग रेंज पहुंची थीं। पुरस्कार वितरण समारोह में नेशनल राइफल एसोसिएशन के अध्यक्ष रनिंदर सिंह भरतिया और मानव रचना यूनिवर्सिटी के उप-कुलपति डॉ. एन.सी. वाधना ने विजेताओं को पदक प्रदान किए। जोरहाट के युवा समाजसेवी के निवर्तमान सचिव दिलीप और संगीता गट्टाणी की पुत्री प्रियांशी की इस विशिष्ट उपलब्धि पर लोगों ने बधाइयां दी।

नि:शुल्क वोटर फेसिलिटेशन सेंटर का किया आयोजन

मारवाड़ी सम्मलेन, कामरूप शाखा के तत्वावधान में तथा हरियाणा चेरिटेबल ट्रस्ट के सहयोग से विगत 9 व 10 नवंबर 2019 को गुवाहाटी के हरियाणा गेस्ट हाउस के प्रांगण में नि:शुल्क वोटर फेसिलिटेशन सेंटर का आयोजन किया गया। इस दो दिवसीय कार्यक्रम का संपादन डिजिटल इंडिया से अधिकृत जन सेवा केंद्र के तहत नव्या एंटरप्राइज एंड टेक्नोलॉजी द्वारा किया। हरियाणा चेरिटेबल ट्रस्ट का भी इस कार्यक्रम में सराहनीय सहयोग रहा। भारी संख्या में लोगों ने इस सेवा का लाभ उठाया और अपने मतदाता पत्र का सत्यापन कराया। इस दौरान लोगों की सुविधा के लिए नि:शुल्क फोटोकॉपी की व्यवस्था की गई ती, जिसकी लोगों ने खूब सराहना की। शिविर में लोगों की जन प्रतिक्रिया के लिए एक बोर्ड की भी व्यवस्था की गई थी ताकि शाखा अपने कार्यक्रम का मूल्यांकन कर सके। शिविर के सफल आयोजन में अध्यक्ष श्री निरंजन सीकरिया, संस्थापक अध्यक्ष श्री संपत मिश्र, निवर्तमान अध्यक्ष श्री पवन कुमार जाजोदिया, उपाध्यक्ष श्री विजय भीमसारिया, श्री वजय अग्रवाल, सचिव श्री दिनेश गुप्ता, सह-सचिव श्री अनुज चौधरी, कोषाध्यक्ष श्री दीपक जैन, कार्यकारिणी

सदस्य श्री संजय खेतान, श्री रतन कुमार अग्रवाल, श्री सुजीत बखरेड़िया, श्री उमा शंकर गट्टाणी, श्री प्रभात शर्मा, श्री संतोष जैन, श्री दिलीप अग्रवाल सहित साधारण सदस्य श्री पुनीत अग्रवाल, श्री अशोक बजाज, श्री अनूप जाजोदिया, श्री अनिल काबरा, श्री बिनित गुप्ता, श्री प्रदीप बेरिया ने भरपूर सहयोग दिया। प्रांतीय अध्यक्ष श्री मधुसूदन सीकरिया, प्रांतीय महामंत्री श्री राज कुमार तिवाड़ी और पूर्व प्रांतीय महामंत्री श्री प्रमोद तिवाड़ी ने सभी कार्यकर्ताओं के आपसी तालमेल व समय की मांग के हिसाब से इस कार्यक्रम के आयोजन के लिए शाखा की प्रशंसा की। कार्यक्रम के संयोजक व शाखा के कार्यकारी अध्यक्ष श्री विनोद कुमार लोहिया ने सभी शाखा सदस्यों के सहयोग के लिए उनका आभार व्यक्त किया।

लोक कथाओं के जादूगर

''हवाई शब्दजाल व विदेशी लेखकों के अपच उच्छिष्ट का वमन करने में मुझे कोई सार नजर नहीं आता। आकाशगंगा से कोई अजूबा खोजने की बजाय पाँवों के नीचे की धरती से कुछ कण बटोरना ज्यादा महत्वपूर्ण लगता है।''

विजयदान देथा

विजयदान देथा, जिन्हें 'बिज्जी' के नाम से भी जाना जाता है, राजस्थान के प्रसिद्ध लेखक और 'पद्मश्री' पुरस्कार से सम्मानित व्यक्ति थे। उन्हें 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' और 'साहित्य चुड़ामणी पुरस्कार' जैसे विभिन्न अन्य पुरस्कारों से भी समानित किया गया। विजयदान देथा की राजस्थानी भाषा में चौदह खडों में प्रकाशित 'बाताँ री फुलवारी' के दसवें खण्ड को भारतीय राष्ट्रीय साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत किया गया, जो राजस्थानी कृति पर पहला पुरस्कार है।

जीवन परिचय

लोक कथाओं एवं कहावतों का अद्भुत संकलन करने वाले 'पद्मश्री' विजयदान देथा की कर्मस्थली उनका पैतृक गांव बोरुंदा ही रहा तथा एक छोटे से गांव में बैठकर अंतर्राष्ट्रीय स्तर के साहित्य का सृजन किया। राजस्थानी लोक संस्कृति की प्रमुख संरक्षक संस्था रूपायन संस्थान (जोधपुर) के सचिव देथा का जन्म 1 सितंबर 1926 को बोरूंदा में हुआ। प्रारम्भ में 1953 से 1955 तक बिज्जी ने हिंदी मासिक प्रेरणा का संपादन किया। बाद में हिंदी त्रैमासिक 'रूपम', राजस्थानी शोध पत्रिका 'परम्परा', लोकगीत 'गोरा हट जा', राजस्थान के प्रचलित प्रेमाख्यान का विवेचन 'जैठवै रा सोहठा' और कोमल कोठारी के साथ संयुक्त रूप से वाणी और लोक संस्कृति का सम्पादन किया।

विजयदान देथा की लिखी कहानियों पर दो दर्जन से ज्यादा फिल्में बन चुकी हैं, जिनमें मणि कौल द्वारा निर्देशित 'दुविधा' पर अनेक राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार मिल चुके हैं। इसके अलावा वर्ष 1986 में उनकी कथा पर चर्चित फिल्म निर्माता-निर्देशक प्रकाश झा द्वारा निर्देशित फिल्म 'परिणीति' काफी प्रभावित हुई है। राजस्थान साहित्य अकादमी 1972-73 में उन्हें

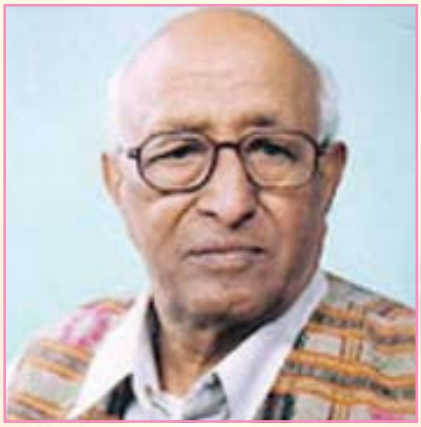

विशिष्ट साहित्यकार के रूप में सम्मानित कर चुकी है। 'दुविधा' पर आधारित हिंदी फिल्म 'पहेली' में अभिनेता शाहरुख खान और रानी मुखर्जी मुख्य भूमिकाओं में थे। यह उनकी किसी रचना पर बनी अंतिम फिल्म है। रंगकर्मी हबीब तनवीर ने विजयदान देथा की लोकप्रिय कहानी 'चरणदास चोर' को नाटक का स्वरूप प्रदान किया था और श्याम बेनेगल ने इस पर एक फिल्म भी बनाई थी।

कृतियाँ

राजस्थानी भाषा में करीब 800 से अधिक लघुकथाएं लिखने वाले विजयदान देथा की कृतियों का हिंदी, अंग्रेजी समेत विभिन्न भाषाओं में अनुवाद किया गया। विजयदान देथा ने कविताएँ भी लिखीं और उपन्यास भी। वे कलात्मक दृष्टि से उतने सफल नहीं नहीं हो सके। संभवत: उनकी रचनात्मक क्षमता खिल पाई लोक कथाओं के साथ उनके अपने काम में। विजयदान देथा ने रंगमंच और सिनेमा को अपनी ओर खींचा। एक अच्छी खासी आबादी है, जो उन्हें 'चरणदास चोर' के माध्यम से ही जानती है। अमोल पालेकर, मणि कौल, प्रकाश झा, श्याम बेनेगल जैसे फिल्मकारों ने उनकी कहानियों पर फिल्में बनाईं। हबीब तनवीर उनकी कहानी को अपनाने वाले रंग निर्देशकों में सबसे प्रसिद्ध हैं, लेकिन देश भर में उनकी जाने कितनी कहानियों को मंच पर खेला गया, इसका कोई हिसाब नहीं है।

राजस्थान की रंग-रंगीली लोक संस्कृति को

राजस्थानी कृतियाँ

- बाताँ री फुलवारी, भाग 1-14, 1960 - 1974, लोक लोरियाँ
- प्रेरणा (कोमल कोठारी द्वारा सह-सम्पादित) 1953
- सोरठा, 1956 - 1958
- टिडो राव, राजस्थानी की प्रथम जेब में रखने लायक पुस्तक, 1965
- उलझन, 1984, (उपन्यास)
- अलेखुन हिटलर, 1984, (लघु कथाएँ)
- रूँख, 1987
- कबू रानी, 1989, (बच्चों की कहानियाँ)
- राजस्थानी-हिन्दी कहावत कोष। (संपादन)

हिन्दी अनुवादित कृतियाँ

अपनी मातृ भाषा राजस्थानी के समादर के लिए 'बिज्जी' ने कभी अन्य किसी भाषा में नहीं लिखा, उनका अधिकतर कार्य उनके एक पुत्र कैलाश कबीर द्वारा हिन्दी में अनुवादित किया।

- उषा, 1946 (कविताएँ)
- बापू के तीन हत्यारे, 1948 (आलोचना)
- ज्वाला साप्ताहिक में स्तम्भ, 1949-1952
- साहित्य और समाज, 1960, (निबन्ध)
- अनोखा पेड़ (बच्चों की कहानियाँ), 1968
- फुलवारी (कैलाश कबीर द्वारा हिन्दी अनुवादित) 1992
- चौधरायन की चतुराई (लघु कथाएँ) 1996
- अन्तराल, 1997 (लघु कथाएँ)
- सपन प्रिया, 1997 (लघु कथाएँ)
- मेरो दर्द ना जाणे कोय, 1997 (निबन्ध)
- अतिरिक्ता, 1997 (आलोचना)
- महामिलन, (उपन्यास) 1998
- प्रिया मृणाल, 1998 (लघु कथाएँ)

आधुनिक कलेवर में पेश करने वाले, लोककथाओं के अनूठे चितेरे विजयदान देथा यानी बिज्जी अपने पैतृक गांव में ही रहते थे, राजस्थानी में ही लिखते थे और हिन्दी जगत फिर भी उन्हें हाथों-हाथ लेता था। चार साल की उम्र में पिता को खो देने वाले श्री देथा ने न कभी अपना गांव छोड़ा, न अपनी भाषा। ताउम्र राजस्थानी में लिखते रहे और लिखने के सिवा कोई और काम नहीं किया। बने बनाए सांचों को तोड़ने वाले विजयदान देथा ने कहानी सुनाने की राजस्थान की समृद्ध परंपरा से अपनी शैली का तालमेल किया। 'चतुर गड़ेरियों', 'मूर्ख राजाओं', 'चालाक भूतों' और 'समझदार राजकुमारियों की जुबानी' विजयदान देथा ने जो कहानियां बुनीं उन्होंने उनके शब्दों को जीवंत कर दिया। राजस्थान की लोककथाओं को मौजूदा समाज, राजनीति और बदलाव के औजारों से लैस कर उन्होंने कथाओं की ऐसी फुलवारी रची है कि जिसकी सुगंध दूर-दूर तक महसूस की जा सकती है। दरअसल वे एक जादुई कथाकार थे। अपने ढंग के अकेले ऐसे कथाकार, जिन्होंने लोक साहित्य और आधुनिक साहित्य के बीच एक बहुत ही मजबूत पुल बनाया था। उन्होंने राजस्थान की विलुप्त होती लोक गाथाओं की ऐसी पुनर्रचना की, जो अन्य किसी के लिए लगभग असंभव थी।

सही मायनों में वे राजस्थानी भाषा के भारतेंदु हरिश्चंद्र थे, जिन्होंने उस अन्यतम भाषा में आधुनिक गद्य और समकालीन चेतना की नींव डाली। अपने लेखन के बारे में उनका कहना था- हवाई शब्दजाल व विदेशी लेखकों के अपच उच्छिष्ट का वमन करने में मुझे कोई सार नजर नहीं आता। आकाशगंगा से कोई अजूबा खोजने की बजाय पाँवों के नीचे की धरती से कुछ कण बटोरना ज्यादा महत्वपूर्ण लगता है। अन्यथा इन कहानियों को गढ़ने वाले लेखक की कहानी तो अनकही रह जाएगी। विजयदान देथा की कहानियाँ पढ़कर विख्यात फिल्मकार मणि कौल इतने अभिभूत हुए कि उन्होंने तत्काल उन्हें लिखा- 'तुम तो छुपे हुए ही ठीक हो। ...तुम्हारी कहानियाँ शहरी जानवरों तक पहुँच गईं तो वे कुत्तों की तरह उन पर टूट पड़ेंगे। ...गिद्ध हैं नोच खाएँगे। तुम्हारी नम्रता है कि तुमने अपने रत्नों को गाँव की झीनी धूल से ढँक रखा है।' हुआ भी यही, अपनी ही एक कहानी के दलित पात्र की तरह- जिसने जब देखा कि उसके द्वारा उपजाये खीरे में बीज की जगह 'कंकड़-पत्थर' भरे हैं तो उसने उन्हें घर के एक कोने में फेंक दिया, किन्तु बाद में एक व्यापारी की निगाह उन पर पड़ी तो उसकी आँखें चौंधियाँ गईं, क्योंकि वे कंकड़-पत्थर नहीं हीरे थे। विजयदान देथा के साथ भी यही हुआ। उनकी कहानियाँ अनूदित होकर जब हिन्दी में आईं तो हिन्दी संसार की आँखें चौंधियाँ गईं।

> *"तुम तो छुपे हुए ही ठीक हो। ...तुम्हारी कहानियाँ शहरी जानवरों तक पहुँच गईं तो वे कुत्तों की तरह उन पर टूट पड़ेंगे। ...गिद्ध हैं नोच खाएँगे। तुम्हारी नम्रता है कि तुमने अपने रत्नों को गाँव की झीनी धूल से ढँक रखा है।"*
>
> **मणि कौल**

सम्मान और पुरस्कार

2007 में पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित विजयदान देथा को 2011 के 'साहित्य नोबेल पुरस्कार' के लिए भी नामांकित किया गया था, हालांकि बाद में यह अवॉर्ड टॉमस ट्रांसट्रॉमर को दिया गया। इसके अतिरिक्त उन्हें 'साहित्य अकादमी पुरस्कार', 'मरूधरा पुरस्कार' तथा 'भारतीय भाषा परिषद पुरस्कार' भी प्रदान किए गए।

निधन

राजस्थानी लेखक विजयदान देथा का रविवार 10 नवंबर, 2013 को दिल का दौरा पड़ने से बोरुंदा गांव (जोधपुर) में निधन हो गया। उन्होंने राजस्थान की लोक कथाओं को पहचान और आधुनिक स्वरूप प्रदान करने में अहम भूमिका निभाई। 87 वर्षीय विजयदान देथा के परिवार में तीन पुत्र और एक पुत्री हैं।

सौजन्य से : इंटरनेट
संकलनकर्ता : श्री विनोद कुमार लोहिया

मारवाड़ी-व्यापारी होना भी कहां आसान है दोस्तों..

ना किसी के ख्वाबों से मिलेंगे
ना किसी के अरमान में मिलेंगे
गर्मी, सर्दी, बरसात यूँ ही गुजर जाती है,
नींद भी पूरी होती नहीं कि रात गुजर जाती है,
होली, दिवाली, नवरात्रि
31st पर भी हम काम से मिलेंगे,
तुम आ जाना दोस्त
हम हमेशा दुकान में मिलेंगे

जमाने भर की खुशियों से अलग हैं हम,
लोगों को लगता है गलत हैं हम,
बीमार होकर भी ठीक रहती है तबियत हमारी,
कोई आजकल पूछता भी नहीं खैरियत हमारी,
कभी माल छोड़ने, तो कभी बैंक
या कभी ट्रैफिक के जाम में मिलेंगे,
तुम हमेशा आ जाना ऐ दोस्त
हम हमेशा दुकान में मिलेंगे।

अंडर-14 क्रिकेट टूर्नामेंट में शानदार प्रदर्शन

वरुण की टीम ने असम को बनाया चैंपियन

मारवाड़ी समाज के युवा शिक्षा के साथ-साथ खेल-कूद में भी अपना लोहा मनवा रहे हैं। मारवाड़ी सम्मेलन, कामरूप शाखा के सदस्य व परिणय बंधन के संयोजक श्री प्रदीप कुमार जाजोदिया के छोटे सुपुत्र वरुण जाजोदिया और उनकी टीम ने बीते वर्ष 2019 में 10वें स्कूल नेशनल चैंपियनशिप के अंतर्गत स्कूल क्रिकेट फेडरेशन ऑफ इंडिया द्वारा आयोजित व्बॉयज अंडर-14 क्रिकेट टूर्नामेंट में असम को चैंपियन बनाया। वरुण जाजोदिया की कप्तानी में असम टीम ने दिसंबर महीने में पुडुचेरी में अंडर-14 क्रिकेट टूर्नामेंट में हिस्सा लिया। यह टूर्नामेंट 4 दिसंबर से 7 दिसंबर तक आयोजित किया गया था। मुख्य कोच निलंजय भट्टाचार्य और टीम मैनेजर दीपक राजभर के साथ असम की टीम 1 दिसंबर को पुडुचेरी पहुंची। इस टूर्नामेंट में वरुण की अगुवाई में असम टीम के युवा खिलाड़ियों ने शानदार प्रदर्शन किया और टीम को फाइलन में जगह बनाने सफल हुई। कप्तान व विकेटकीपर वरुण ने भी शानदार बल्लेबाजी की। टूर्नामेंट टूर्नामेंट का फाइनल मुकाबला काफी रोमांचक रहा। कांटे की टक्कर वाले इस मैच में अंतत: वरुण की टीम ने जीत हासिल की और असम अंडर-14 का चैंपियन बन गया। कप्तान वरुण जाजोदिया के सिपाहसलारों में वैभव रॉय, तुषार दास, विक्टर कश्यप (उप कप्तान), मृणव प्राण डेका, पियुषकोठारी, इशान दत्ता, गर्व जैन,मोहित साहा, रिशी मालपानी, सुभजीत सील, अंकित कुमावत, श्रेयस मुखर्जी, खुंसूर अली, पप्पू पासवान शामिल थे। वरुण की इस उपलब्धिपर शाखा को गर्व है और उसके उज्जव भविष्य के लिए शुभकामनाएं देती है।

जय राजस्थान

गूंदपाक सियाले में,
दही-छाछ ऊँधाले में,
चीलड़ो बरसात में,
डॉयफ्रूट बारात में...जिसोरो करा देवे।

गलरको खीर रो,
कोड़तो पनीर रो,
रंग केसर फीणी रो,
चूरमो देसण चीणी रो...जिसोरो करा देवे।

रोटी बाजरी री,
चटणी काचरी री,
रोटियो भोभर(1) रो,
बड़ो मोठ मोगर रो...जिसोरो करा देवे।

सबड़को राबड़ी रो,
स्वाद गुलाबड़ी रो,
साग काचर फली रो,
मिठास गुड़ री डली रो...जिसोरो करा देवे।

खुपरी मतीरे री,
खुशबु सीरे री,
अचार सांगरी केर रो,
भुजियो बीकानेर रो...जिसोरो करा देवे।
कचौड़ी दाल री,

जलेबी घाल री,
खीचड़ो बाजरी मोठ रो,
मजो सावण री गोठ रो...जिसोरो करा देवे।

चरकास कोकले रो,
रायतो फोगले रो,
जायको खजूर रो,
लाडू मोतीचूर रो...जिसोरो करा देवे।

दूध घर री गाय रो,
सुर्डको गर्म चाय रो,
राजभोग छीणे रो,
शर्बत केरी पोढीणे रो...जिसोरो करा देवे।

कतली बिदाम री,
बात्यां राज कुमार री,
मीठो पत्तो पान रो,
खाणो राजस्थान रो...जिसोरो करा देवे।
जय राजस्थान

(1) भोभर = थेपड़ी रा खीरा ।
(2) कोकला = छिलके सहित काट कर सुकायोडा छोटा काचर।

दीपावली मिलन समारोह

से जगमगाया सांगानेरिया धर्मशाला

दीपावली की खुशियों के साथ मारवाड़ी सम्मेलन की कामरूप शाखा ने स्थानीय सांगानेरिया धर्मशाला में दीपावली प्रीति समारोह का आयोजन किया। कार्यकम का शुभारंभ मारवाड़ी सम्मेलन के प्रांतीय अध्यक्ष श्री मधुसूदन सिकरिया, प्रांतीय महामंत्री श्री राजकुमार तिवाड़ी, प्रांतीय कोषाध्यक्ष श्री संजय मोर, प्रांतीय संगठन मंत्री श्री कृष्ण कुमार जालान, समाजसेवी श्री गोपाल सोनी, कार्यकारी अध्यक्ष श्री विनोद कुमार लोहिया, निवर्तमान अध्यक्ष श्री पवन कुमार जाजोदिया, संस्थापक अध्यक्ष श्री संपत मिश्र, उपाध्यक्ष श्री विजय भीमसरिया, श्री विजय अग्रवाल, सचिव श्री दिनेश गुप्ता ने दीप प्रज्ज्वलित कर किया। शाखाध्यक्ष श्री निरंजन सिकरिया की अनुपस्थिति में श्री विनोद कुमार लोहिया ने अध्यक्षीय संदेश का वाचन किया। इसके बाद प्रांतीय अध्यक्ष श्री मधुसूदन सीकरिया और महामंत्री श्री राजकुमार तिवाड़ी ने अपने संबोधन में सभी को दीपावली की शुभकामनाएं दीं। इस अवसर पर उपस्थित अतिथि श्री अशोक अग्रवाल, श्री संजय मोर, श्री सांवरमल अग्रवाल, श्री शंकर बिड़ला, श्री कंचन केजरीवाल, श्री अमित जैन, श्री प्रकाश सुराणा का फुलाम गामोछा से सम्मान किया गया। सांस्कृतिक कार्यक्रम के साथ लकी ड्रा का आयोजन किया गया, जिसमें 24 ईनाम और 48 सांत्वना पुरस्कार रखे गए। इस मौके पर आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम में समाज के बच्चों व युवाओं ने बढ़चढ़ कर भाग लिया। संस्थापक अध्यक्ष श्री संपत मिश्र ने अपने गायन से लोगों को भाव विभोर किया। कार्यक्रम के संयोजक श्री प्रभात शर्मा और श्री विनोद शर्मा ने भी गीत गाकर अपनी कला का परिचय दिया।

इस कार्यक्रम को सफल बनाने में श्री विनोद कुमार लोहिया, श्री विजय भीमसरिया, श्री विजय अग्रवाल, श्री पवन कुमार जाजोदिया, श्री संपत मिश्र, श्री अनुज चौधरी, श्री दीपक जैन, श्री उमा शंकर गट्टाणी, श्री अजीत शर्मा, श्री संजय खेतान, श्री रतन अग्रवाल, श्री रतन खाखोलिया, श्री राजेश जाजोदिया, श्री धनराज कंकाणी, श्री संतोष जैन, श्री राजीव अग्रवाल के अलावा अन्य कई सदस्यों ने सक्रिय सहयोग दिया।

इस अवसर पर प्रांतीय अध्यक्ष और प्रांतीय महामंत्री एवं अन्य प्रांतीय पदाधिकारियों तथा शाखा पदाधिकारियों ने प्रांतीय कार्यालय से जारी आजीवन सदस्यता प्रमाण पत्र का विमोचन भी किया। कार्यक्रम का समापन प्रीति भोज के साथ हुआ। इस समारोह में शाखा सदस्यों के पारिवारिक सदस्य भी मौजूद थे।

मारवाड़ी सम्मेलन, कामरूप शाखा

उत्साह के साथ मनाया मारवाड़ी सम्मेलन का 85वां स्थापना दिवस

- **आठगांव चाबीपुल प्राथमिक विद्यालय के नवीनीकरण की रखी आधारशिला**
- **नि:शुल्क चिकित्सा जांच शिविर का भी किया आयोजन**

मारवाड़ी सम्मेलन की कामरूप शाखा ने 25 दिसबंर 2019 को बड़े उत्साह के साथ अखिल भारतीय मारवाड़ी सम्मेलन का 85वां स्थापना दिवस मनाया। इस उपलक्ष्य में आठगांव चाबीपुल प्राथमिक विद्यालय के प्रांगण में विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत में सुबह 10 बजे से मारवाड़ी हॉस्पिटल्स एवं लायंस आई हॉस्पिटल के सहयोग से एक नि:शुल्क चिकित्सा जांच शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में रक्तचाप व मधुमेह की जांच के साथ-साथ मरीजों के स्वास्थ्य की भी जांच की गई। इनमें बच्चे व बुजुर्ग भी शामिल थे। स्वास्थ्य जांच के बाद मरीजों को आवश्यकतानुसार मुफ्त में दवाइयां दी गईं।

इस शिविर में 100 से अधिक मरीजों ने भाग लिया और स्वास्थ्य जांच का लाभ उठाया। स्वास्थ्य जांच के अलावा लायंस आई हॉस्पिटल्स की तरफ से नेत्र जांच शिविर भी लगाया गया। इस शिविर में नेत्र विकार से पीड़ित 38 मरीजों की आंखों की जांच की गई। मारवाड़ी हॉस्पिटल्स की तरफ से डॉ. बिपुल कांत बरुवा, श्री अभिजीत चौधरी, श्रीमती मृदुस्मिता पाठक और श्रीमती कोरबी दास ने अपनी सेवाएं प्रदान की। लायंस हॉस्पिटल्स की तरफ से नेत्र परीक्षण किया, जिसमें डॉ. देबेश्वर पाठक एवं श्रीमती मामनी देवी ने अपनी सेवाएं दीं। इस अवसर पर शाखा की तरफ से विद्यालय के नवीनीकरण एवं दर्शकदीर्घा की आधारशिला भी रखी गई। नवीनीकरण के अंतर्गत विद्यालय के एक खंड में छत, फाल्स शिलिंग, टाइल्स, रिल्लिंग, बाउंड्री वाल का निर्माण किया जाएगा।

इस मौके पर प्रांतीय संगठन मंत्री श्री कृष्ण कुमार जालान सहित शाखा के पदाधिकारी, कार्यकारिणी सदस्य और साधारण सदस्यों की उपस्थिति थे। अध्यक्ष श्री निरंजन सीकरिया ने सभी का स्वागत करते हुए नवीनीकरण के बारे में विस्तार से बताया और सभी के सहयोग की कामना की। कार्यक्रम में प्रांत के श्री कृष्ण कुमार जालान, मारवाड़ी हॉस्पिटल्स के श्री राहुल चक्रवर्ती तथा लायंस हॉस्पिटल्स के डॉ. देबेश्वर पाठक का फुलाम गमछा से स्वागत किया गया। तदुपरांत श्री कृष्ण कुमार जालान व शाखा पदाधिकारीयों ने विद्यालय नवीनीकरण की आधारशिला रखी एवं श्री कृष्ण कुमार जालान ने अपनी तरफ से परिसर के लिए अनुदान देने की घोषणा की। विद्यालय नवीनीकरण एवं चिकित्सा शिविर के संयोजक श्री पवन जाजोदिया तथा निर्माण कार्य श्री बिमल कुमार अग्रवाल की देखरेख में होगा। कार्यक्रम के अंत में सचिव श्री दिनेश गुप्ता ने सभी का धन्यवाद ज्ञापन किया।

खबरों में कामरूप शाखा...

हरियाणा गेस्ट हाउस में मतदाता पत्र सत्यापन संपन्न

मारवाड़ी सम्मेलन, कामरूप का दो दिवसीय निःशुल्क वेरिफिकेशन

हरियाणा गेस्ट हाउस में मतदाता पत्र सत्यापन संपन्न

मारवाड़ी सम्मेलन, कामरूप का दो दिवसीय निःशुल्क वेरिफिकेशन

सम्मेलन के स्थापना दिवस पर कामरूप शाखा के कई कार्यक्रम आयोजित

सम्मेलन के स्थापना दिवस पर कामरूप शाखा के कई कार्यक्रम आयोजित

सम्मेलन के स्थापना दिवस पर कई कार्यक्रम आयोजित

मारवाड़ी सम्मेलन, कामरूप शाखा का वोटर फेसिलिटेशन सेंटर संपन्न

तिनसुकिया के लाल को अमेरिका में कमाल

राज, ईशा और पार्थ ने 'वर्ल्ड स्कॉलर्स कप' में बिखेरी चमक

सीखना और उत्कृष्टता सीमाओं के बाधाओं से बंधे नहीं हैं। हमारे बच्चों को वैश्विक युग में पोषित किया जा रहा है जहां ज्ञान सभी सीमाओं से परे है। 'सदा यों ही चमकते रहो। दुनिया को आपकी रोशनी की जरूरत है।' यह सम्मान का क्षण था जब तीन युवा विद्वानों की एक टीम ने 'वर्ल्ड स्कॉलर्स कप' के वैश्विक मंच पर तिनसुकिया का प्रतिनिधित्व किया।

श्री अंकुर सोवासरिया और श्रीमती शिखा सोवासरिया की पुत्री ईशा सोवासरिया, श्री विशेष अग्रवाल और श्रीमती शालिनी अग्रवाल के पुत्र राज अग्रवाल, श्री राकेश अग्रवाल (कारीवाला) और श्रीमती सुकोमल अग्रवाल के पुत्र पार्थ अग्रवाल। तीनों बच्चे शिक्षा द गुरुकुल, छोटा हापजन, तिनसुकिया में अध्ययनरत हैं। वर्ल्ड स्कॉलर्स कप एक दिलचस्प, अंत: विषय, चर्चा आधारित और टीम उन्मुख वैश्विक कार्यक्रम है। इसका उद्देश्य भविष्य के विद्वानों और नेताओं के वैश्विक समुदाय को प्रेरित करना है। इसमें चार रोमांचक प्रतियोगिताएं शामिल हैं- स्कॉलर्स बाउल, सहयोगात्मक लेखन, स्कॉलर्स चुनौती और टीम डिबेट। इसके अलावा स्कैवेंजर हंट और प्रतिभा प्रदर्शन इसके मुख्य आकर्षण हैं।

यह यात्रा तब शुरू हुई, जब उन्होंने इस साल अप्रैल में गुड़गांव में रीजनल राउंड में भाग लिया और ग्लोबल राउंड के लिए चुने गए। 6-10 सितंबर को आयोजित मनीला ग्लोबल राउंड के लिए टीम ने कड़ी मेहनत, दृढ़ता, एकाग्रता और समर्पण के साथ पुरजोर तैयारी की और बेहतरीन प्रदर्शन किया। वो एक यादगार पल था जब टीम येल यूनिवर्सिटी, न्यू हेवन, कनेक्टिकट, यूएसए में आयोजित होने वाले अंतिम पड़ाव, टूर्नामेंट ऑफ चैंपियंस के लिए चुन ली गई।

टीम ने कुल 15 स्वर्ण और रजत पदक हासिल किए। ईशा ने साइंस चैलेंज के टॉपर होने का तमगा हासिल किया, जो उल्लेखनीय है। परिवारों, दोस्तों और समाज ने बड़े पैमाने पर, बच्चों को येल के लिए तथा अपने भविष्य के सभी प्रयासों के लिए बहुत आशीर्वाद दिया है।

समाज को गर्व है जिन पर....

डिब्रुगढ़ की सुश्री सोनल अग्रवाल ने Dr. R.K.B. Law College कॉलेज से डिब्रुगढ़ विश्वविद्यालय से 1st क्लास फर्स्ट पोजीशन प्राप्त की है। सोनल मारवाड़ी सम्मेलन की डिब्रुगढ़ शाखा के अध्यक्ष श्री राजकुमारजी अग्रवाल एवं श्रीमती राखी की सुपुत्री है। सोनल की इस उपलब्धि पर मारवाड़ी समाज को गर्व और अभिमान है। 'कामरूप शाखा' की तरफ से हम इन सभी के उज्जवल भविष्य की कामना करते हैं।

गुवाहाटी की सुश्री प्रीति गुप्ता ने N.E.F. Law College से गुवाहाटी विश्वविद्यालय से 1st क्लास फर्स्ट पोजीशन प्राप्त की है। प्रीति श्री राजेंद्र गुप्ता एवं श्रीमती सपना की सुपुत्री है। प्रीति की इस उपलब्धि पर मारवाड़ी समाज को गर्व और अभिमान है। 'कामरूप शाखा' की तरफ से हम इन सभी के उज्जवल भविष्य की कामना करते हैं।

Since 1976

INDIAN CANVAS INDUSTRIES

e-mail : indiancanvas@gmail.com

Manufacturer of all types of Tents, Canvas/HDPE Tarpaulins, Automobile Hoods, Canopies, Mosquito Net FR, Coat Combat, Kit Bag, Kit Box (Steel), Synthetic/Cotton Web Items, Uniform Items and allied Textile Products.

GMR

GMR INFRACON

e-mail : gmrinfracon@gmail.com

Manufacturer of Concrete Paver Blocks, Fly Ash Bricks
Designer Coloured Parking Tiles & Pavers.

With Best Compliments From

Mukesh Kr. Jindal

923, Fatasil Main Road
Near R.G. Barua College
Guwahati-781009 (Assam)

Ph. : 0361-2472921
91 94350 44872